آيَاتُهَا ٦ ❀ (١٠٩) سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(109) सूरतुल काफ़िरून कुफ़्र करने वाले	आयात 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿١﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿٢﴾

2	जिस की तुम इबादत करते हो	मैं इबादत नहीं करता	1	काफ़िरो	ऐ	कह दीजिए

وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ﴿٣﴾ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿٤﴾

4	जिस की तुम ने इबादत की	मैं इबादत करने वाला	और न	3	जिस की मैं इबादत करता हूँ	इबादत करने वाले	तुम	और न

وَلَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ﴿٥﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿٦﴾ ع ٦ ٣٤

6	मेरा दीन	और मेरे लिए	तुम्हारा दीन	तुम्हारे लिए	5	जिस की मैं इबादत करता हूँ	इबादत करने वाले	और न तुम

آيَاتُهَا ٣ ❀ (١١٠) سُوْرَةُ النَّصْرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(110) सूरतुन नस्र मदद	आयात 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ﴿١﴾ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ

में	दाख़िल हो रहे हैं	लोग	और आप (स) देखें	1	और फ़तह	अल्लाह की मदद	आजाए	जब

دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿٢﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

और बख़्शिश तलब कीजिए उस से	अपना रब	तारीफ़ के साथ	पस पाकी बयान करें	2	फ़ौज दर फ़ौज	अल्लाह का दीन

اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۧ﴿٣﴾ ع ١ ٣٥

3	बड़ा तौबा कुबूल करने वाला	है	बेशक वह

آيَاتُهَا ٥ ❀ (١١١) سُوْرَةُ تَبَّتْ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(111) सूरह तब्बत आग की लपट, शोला	आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

تَبَّتْ يَدَاۤ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ؕ﴿١﴾ مَاۤ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا

और जो	उस का माल	उस के	काम आया	न	1	और वह हलाक हुआ	अबू लहब	दोनों हाथ	टूट गए

كَسَبَ ؕ﴿٢﴾ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۙ﴿٣﴾ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ

लादने वाली	और उस की बीवी	3	शोले मारती	आग	अ़नक़रीब दाख़िल होगा	2	उस ने कमाया

الْحَطَبِ ۚ﴿٤﴾ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۧ﴿٥﴾ ع ٥ ٣٦

5	खजूर	से	रस्सी	उस की गर्दन	में	4	लकड़ी (ईंधन)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

कह दीजिए: ऐ काफ़िरो! (1) मैं इबादत नहीं करता जिन की तुम इबादत करते हो, (2) और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। (3) और न मैं इबादत करने वाला हूँ जिन की तुम ने इबादत की, (4) और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। (5) तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन। (6)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब अल्लाह की मदद आजाए और फ़तह (हो जाए)। (1) और आप (स) देखें कि लोग दाख़िल हो रहे हैं अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज। (2) पस अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करें और उस से बख़्शिश तलब करें, बेशक वह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है। (3)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए और वह हलाक हुआ। (1) उस के काम न आया उस का माल और जो उस ने कमाया। (2) अ़नक़रीब दाख़िल होगा शोले मारती हुई आग में। (3) और उस की बीवी लादने वाली ईंधन, (4) उस की गर्दन में खजूर की छाल की रस्सी होगी। (5)